CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

[Conference Special-NTMAE-24]

राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सहसंबंध का अध्ययन

योगेन्द्र कुमार रावल
डॉ. बिन्दु कुमारी
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)
Email – Yogendrarawal143@gmail.com, Mobile – 9887475670

First draft received: 14.05.2024, Reviewed: 19.05.2024, Final proof received: 18.06.2024, Accepted: 28.06.2024

सारांश

प्रस्तुत शोध में राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सहसंबंध का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा न्यादर्श के रूप में झालावाड़ जिले के शासकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत कुल 100 शिक्षकों (राजकीय विद्यालयों के 50 शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के 50 शिक्षकों) का न्यादर्श के लिये चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन के लिये शोधार्थी द्वारा डॉ प्रमोद कुमार एवं डी. एन मुथा द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि प्रमाणिक मापनी का उपयोग किया गया है। शोध परिणामों से प्राप्त हुआ कि राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य उच्च ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया। निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य उच्च ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया। राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सामान्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

मुख्य शब्द : *राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक, कार्य संतुष्टि आदि.*

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र का भविष्य शिक्षकों पर निर्भर करता है, अतः उनका सिद्धांतवादी एवं दक्ष होना आवश्यक है। सभी शिक्षक जन्मजात नहीं होते हैं। बालकों में व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करने एवं सामाजिक, राष्ट्रीय उत्तरदायित्व को सम्पूर्ण तन्मयता के साथ वहन करने योग्य बनाने के लिए प्रशिक्षित अध्यापक होना अत्यन्त आवश्यक है। अतः स्पष्ट है कि अध्यापकों के लिए सेवापूर्व एवं सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा की महती आवश्यकता है।

आधुनिक भारत का भविष्य उसकी शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करता है जो बदले में बौद्धिक रूप से सक्षम और प्रशिक्षित शिक्षकों पर निर्भर करता है। तेजी से बढ़ते शैक्षिक परिदृश्य में अत्यधिक कुशल और परिणामोन्मुखी शिक्षकों की आवश्यकता होती। शिक्षा अब सुचना प्रदान करने के बारे में नहीं है यह वह प्रक्रिया है जिसक माध्यम से शिक्षक युवा पीढ़ी को ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को आत्मसात करने के लिए तैयार करते है ताकि उन्हें सामाजिक आदर्शों को बढ़ावा देने और सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की जिम्मेदारी लेने के लिए उपयुक्त बनाया जा सके। शिक्षक का प्रदर्शन सम्बन्धित मनो–सामाजिक संतुष्टि से बहुत प्रभावित होता है जो वह अपने काम से प्राप्त करता है। यदि कोई शिक्षक अपने कार्य से संतुष्टि नहीं है तो वह अपनी भूमिका ठीक से नहीं निभा सकता है। शिक्षक की अपने कार्य से संतुष्टि शिक्षक, उच्च शैक्षणिक और व्यावसायिक योग्यता के साथ निश्चित रूप से विषय ज्ञान की छात्रा की समझ के स्तर को बढ़ा सकता है। यह शिक्षक है जो सीखने की प्रक्रिया में सूत्रधार, मार्गदर्शन और प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करता है। असंतुष्ट शिक्षक अच्छी शैक्षणिक योग्यता होने के बावजूद भी अपने सहायक के कार्य को पूरे मन से नहीं कर पाएगा। यह पाया गया है कि नौकरी से संतुष्टि एक महत्वपूर्ण चीज है जो शिक्षकों के प्रदर्शन को निर्धारित करने में मदद करेगी। कार्य संतुष्टि एक विशेश कार्य को करने के लिए प्रेरित करने और बनाए रखने का प्रयास है जो छात्रों को एक अच्छा शिक्षक बनने के लिए आवश्यक है। शिक्षण की गुणवत्ता पूरी तरह से सक्रिय, खुश और प्रतिबन्दु शिक्षकों पर निर्भर करती है जो शिक्षक अपनी नौकरी से खुश होते है वे उस नौकरी के लिए अपना 400 प्रतिशत देते है और वे अधिक ध्यान और भक्ति के साथ पढ़ाते है। यह एक ज्ञात तथ्य है कि एक खुश शिक्षक यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत प्रयास करेगा कि प्रदान किया गया ज्ञान प्रत्येक छात्र के लिए समझने में आसान है। कार्य संतुश्टि का प्रभाव शिक्षकों के प्रदर्शन, छात्रों की उपलब्धियों, संगठन की प्रतिबद्धता और कार्य प्रेरणा पर पड़ता है।

कार्य संतुष्टि

कार्य संतुष्टि का अभिप्राय किसी कर्मचारी द्वारा उसके कार्य के प्रति निर्मित सामान्य अभिवृत्ति से है। इसका अनुमान इस आधार पर लगा सकते है कि कोई कर्मचारी अपने परिवेश से पुरस्कार की जो प्रत्याशा रहता है और वस्तुतः जितना प्राप्त होता है दोनों में कितना अन्तर है? यह एक प्रकार की अभिप्रेरणा है जिसके फलस्वरूप कर्मचारी अपना कार्य सम्पादित करने में असीम आनन्द की अनुभूति प्राप्त करता है। यह कार्य संतुष्टि वैक्तिक स्तर पर अनुभुति किया जाता है और किसी भी रूप में इसकी सामूहिक व्याख्या नही की जा सकती है।

बुलक के अनुसार, 'कार्य संतुष्टि एक अभिवृत्ति है जो बहुत सी चाही और अनचाही अनुभवों के परिणाम है जिसमें व्यक्ति के अपने कार्य के प्रति जुड़ाव को परिलक्षित करता है।'

ब्राउन के अनुसार, 'कार्य संतुष्टि, व्यक्ति के अपने कार्य स्थिति के पक्षगत अनुभव या मनोवैज्ञानिक परिस्थिति है। गिलमर के अनुसार, 'कार्य संतुष्टि या असंतुष्टि विविध अभिवृतियों के परिणाम स्वरूप है जिसमें व्यक्ति संबंधित कारकों और जीवन में सामान्य अपने कार्य से रहता है।'

उपर्युक्त परिभाशाओं से स्पष्ट है कि जो कर्मचारी अपने कार्य से संतुष्ट है वे स्वस्थ मानसिक संतुलन रखते है। स्वस्थ मानसिक संतुलन कर्मचारी को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, उसके मनोबल को बनाये रखता है तथा उसकी उत्पादन क्षमता में किसी प्रकार की कमी नहीं आने देता है। अनेक अध्ययनों के द्वारा यह सिद्ध हुआ है कि जो कर्मचारी अपने कार्य से असंतुश्ट होते है उनकी उत्पादन क्षमता कम हो जाती है। अतः कर्मचारी की कार्य असन्तोश को बचाये रखने के लिए आवश्यक है कि औसत स्तर के कर्मचारी को इस प्रकार का कार्य मिले कि वह केवल जीविकोपार्जन का साधन मात्र न हो बल्कि उसे अपने कार्य से उद्देश्य प्राप्त करने की प्रेरणा मिले और जीवन को सुखमय बनाने के सभी तत्व उसमें सम्मिलित हो।

पूर्व शोध का अध्ययन

त्रिवेदी, राहुल (2019) ने अध्यापकों के कार्य तनाव, कार्य व कार्य संतोश के मध्य अर्न्तसम्बन्धों को ज्ञात करने के लिए शहर के 20 महिला व पुरूष शिक्षकों का न्यादर्श लिया। शोध अध्ययन के निष्कर्ष –

1 अध्यापकों का कार्य तनाव उनके कार्य व कार्य संतोष से सार्थक रूप से नकारात्मक सह–सम्बन्धित था, जबकि उनके कार्य संलग्नता व कार्य संतोष में सकारात्मक सार्थक सम्बन्ध थे।

2 कार्य संलग्नता व कार्य कारकों में सार्थक सकारात्मक संबंध थे।

3 कार्य तनाव के कारक कार्य सन्तुष्टि से नकारात्मक रूप से सम्बन्धित थे। अध्यापकों के पूर्ण कार्य तनाव व कार्य संलग्नता में सार्थक रूप से नकारात्मक आंशिक सह–सम्बन्ध था। लेकिन कार्य तनाव व कार्य संतुष्टि के मध्य आंशिक सह सम्बन्ध सार्थक नहीं था।

4 अध्यापकों की कार्य संलग्नता उनकी कार्य संतुष्टि से सकारात्मक व आंशिक रूप से सह– सम्बन्धित थी और यह सम्बन्ध सार्थक था।

सिंह एवं कुमारी, प्रीति एवं संतोशी (2020) ने लिटिल अण्डमान के शैक्षणिक संस्थाओं में कार्यरत् शिक्षकों के कार्य संतुष्टि पर एक अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन हेतु लिटिल अण्डमान के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षको का चयन संभाव्य न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है। शिक्षको के कार्य संतुष्टि मापन के लिए डा. मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि मापन स्केल का प्रयोग किया गया है। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेशण हेतु मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के परिणामस्वरूप निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षको के कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

समस्या कथन

राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सहसंबंध का अध्ययन।

शोध के उद्देश्य

1. राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

2. निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना ।

3. राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक सहसंबंध नही है।
2. निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक सहसंबंध नही है।
3. राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुश्टि के मध्य सार्थक सहसंबंध नही है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के लिये झालावाड़ जिले के शासकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत कुल 100 शिक्षकों (राजकीय विद्यालयों के 50 शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के 50 शिक्षकों) का न्यादर्श के लिये चयन किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में डॉ. प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि प्रमाणिक मापनी का प्रयोग किया गया।

शोध विधि

इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

प्रद्रत्तों का संकलन

शोधार्थी द्वारा प्रदत्तों के संकलन हेतु राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्राचार्यो से अनुमति प्राप्त कर महिला एवं पुरूष शिक्षकों से सोहार्द्रपूर्ण वातावरण में कार्य संतुष्टि मापनी भरवायी गई।

प्रदत्तों का विश्लेशण

प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु संकलित प्रदत्तो का विश्लेशण कालपियर्सन सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया।

परिणाम एवं व्याख्या

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना

शोध अध्ययन का उददेश्य झालावाड जिले के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना था। प्राप्त प्रदत्तो का विश्लेशण काल पियर्सन सहसबंध गुणांक द्वारा किया गया। प्रदत्त विश्लेशण का विवरण सारिणी 01 मे दर्शाया गया है।

तालिका 01

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सहसंबंध गुणांकों का सारांश

कार्य संतुष्टि	महिला शिक्षक	पुरूष शिक्षक
महिला शिक्षक	1	-0.818**
Pearson Correlation (r)	50	0.000
Sig. (2-tailed) N		50
पुरूष शिक्षक	-0.818	1
Pearson Correlation	0.001	50
Sig. (2-tailed) N	50	

** सार्थकता का स्तर 0.01

विवेचना :– तालिका 01 से पता चलता है कि झालावाड जिले के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सहसंबंध का मान –.818 है, जोकि सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना ''राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक सहसंबंध नही है।'' निरस्त की जाती है। निश्कर्श स्वरूप यह कहा जा सकता है कि राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक रूप से ऋणात्मक सहसबंध पाया गया, जो कि उच्च ऋणात्मक सहसंबंध है। अर्थात् राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य उच्च ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया।

निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुश्टि का अध्ययन करना शोध अध्ययन का उद्देश्य झालावाड जिले के निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना था। प्राप्त प्रदत्तो का विश्लेशण काल पियर्सन सह सबंध गुणांक द्वारा किया गया। प्रदत्त विश्लेशण का विवरण सारिणी 02 मे दर्शाया गया है।

तालिका 02

निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सहसंबंध गुणा कों का सारांश

कार्य संतुष्टि	महिला शिक्षक	पुरूष शिक्षक
महिला शिक्षक	1	-0.728**
Pearson Correlation (r)	50	0.000
Sig. (2-tailed) N		50
पुरूष शिक्षक	-0.728**	1
Pearson Correlation	0.000	50
Sig. (2-tailed) N	50	

**सार्थकता का स्तर 0.01

विवेचना :– तालिका 02 से पता चलता है कि झालावाड जिले के निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुश्टि के मध्य सहसंबंध का मान –.728 है, जो कि सार्थकता 7 के स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना ''निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक सहसंबंध नही है।'' निरस्त की जाती है। निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक रूप से ऋणात्मक सहसबंध पाया गया, जो कि उच्च ऋणात्मक सहसंबंध है। अर्थात् निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य उच्च ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया।

राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुश्टि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना

शोध अध्ययन का उद्देश्य झालावाड जिले के राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना। प्राप्त प्रदत्तो का विश्लेशण काल पियर्सन सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया। प्रदत्त विश्लेशण का विवरण सारिणी 03 मे दर्शाया गया है।

तालिका 03

राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सहसंबंध गुणांकों का सारांश

कार्य संतुष्टि	राजकिय शिक्षक	निजि शिक्षक
राजकिय शिक्षक	1	0.418**
Pearson Correlation (r)	100	0.024
Sig. (2-tailed) N		100
निजि शिक्षक	0.418**	1
Pearson Correlation	0.024	100
Sig. (2-tailed) N	100	

विवेचना :– तालिका 03 से पता चलता है कि झालावाड जिले के राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सहसंबंध का मान .418 है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना ''राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक सहसंबंध नही है।'' निरस्त की जाती है। निश्कर्श स्वरूप यह कहा जा सकता है कि राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक रूप से धनात्मक सहसबंध पाया गया, जो कि सामान्य धनात्मक सहसंबंध है। अर्थात् राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सामान्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

निष्कर्ष

1. राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक रूप से ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया, जो कि उच्च ऋणात्मक सहसंबंध है। अर्थात् राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य उच्च ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया।
2. निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक रूप से ऋणात्मक सहसबंध पाया गया, जो कि उच्च ऋणात्मक सहसंबंध है। अर्थात् निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य उच्च ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया।
3. राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक रूप से धनात्मक सहसबंध पाया गया, जो कि सामान्य धनात्मक सहसंबंध है। अर्थात् राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मध्य सामान्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ किसी भी शोध कार्य की महत्ता उसके शैक्षिक निहितार्थ से प्रमाणित होती है। शोधकर्ता अपने शोध की आवश्यकताओं, उपलब्धताओं एवं कमियों का विवेचन जितनी अधिक सूक्ष्मता से करता है, वही शैक्षिक निहितार्थ की महत्ता है। वर्तमान समय में जबकि शिक्षा, शिक्षार्थी केन्द्रित हो गयी है, यह आवश्यकता अनुभव की गयी कि शिक्षक को कार्यकुशल, विशयज्ञात होने के साथ–साथ व्यवहार कुशल भी होना चाहिए। शिक्षक जितना व्यवहार कुशल होगा, उसकी कार्यकुशलता में वृद्धि होगी व शिक्षण कार्य संतुष्टि में भी वृद्धि होगी।

संदर्भ सूची

1. भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देहली
2. शुक्ला सी एस0 (2004) भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन।
3. भटनागर, सुर`श (2005), वर्तमान भारतीय शिक्षा एवं समस्यायें, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।
4. शर्मा आर0 ए0 (1995) शैक्षिक अन ुसंधान के सिद्धान्त मेरठ इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाउस।
5. त्रिवेदी, राहुल (2019), अध्यापकों के कार्य तनाव, कार्य व कार्य संतोश के मध्य अन्त र्सम्बन्धों को ज्ञात करना, पी0 एच0 डी0 एज्यूकेशन आगरा विश्वविद्यालय।
6. सिंह एवं क ुमारी, प्रीति एवं संतोशी (2020) लिटिल अण्डमान के शैक्षणिक संस्थाआ ` में कार्यरत् शिक्षकों के कार्य संतुष्टि पर एक अध्ययन, पी एच0 डी0 एज्यूकेशन, बैंगलोर विश्वविद्यालय।